तीन लोक में सार अतुल सब रिपू का हर्ता,
भव दुःख करदे दूर विषय-विष का हैं हर्ता,
करें कर्म निर्मूल सिद्धि सब सुख का दाता,
शिव-सुख केवल बोध देत उसे जो जपता रहता।।१२।।

सुरसपद को हैं यह देता मुक्ति रमा को वश करता,
चारों गति की विपदा हरता नित रिपुओं की कृति हरता।
दुर्गति का स्तम्भन करता रागद्वेष सारे हरता,
पंच नमन मय मन्त्राराधन सब ही की रक्षा करता।।१३।।

सुख दुख संकट विपद में रण से दुर्गम पंथ।
जपों मन्त्र नवकार नित सब विघ्नों का अन्त।।१४।।

इति श्री णमोकार मन्त्र महात्म्य भाषा समाप्तम्

महामंत्र णमोकार

नवकार मंत्र ही महामंत्र, निजपद का ज्ञान कराता हैं।
नित जपों शुद्ध मन वच तन से, मन वांछित फल का दाता हैं।।१।।

पहला पद श्री अरिहंताणं, यह आतम ज्योति जगाता हैं।
यह समोसरण की रचना का, भव्यों को याद दिलाता हैं।।२।।

दूजा पद श्री सिद्धाणं हैं, यह आतम शक्ति बढ़ाता हैं।
इस से मन होता हैं निरमल, अनुभव का ज्ञान कराता हैं।।३।।

तृतीय पद श्री आयरियाणं, दीक्षा में भाव जगाता हैं।
दुःख से छुटकारा शीघ्र करे, सुखसागर में पहुँचाता हैं।।४।।

हैं उपाध्याय यह चौथा पद, जिन धर्म को यह चमकाता हैं।
करमाश्रव को ढ़ीला करता, यह सम्यक ज्ञान बढ़ाता हैं।।५।।

हैं पाँचवां पद श्री साधू का, यह जैन तत्व सिखलाता हैं।
दिलवाता हैं यह ऊंचा पद, संकट से शीघ्र छुड़ाता हैं।।६।।

यह अनादि निधन हैं महामन्त्र, जिन शासन यह बतलाता हैं।
प्रभु के चरणों में जपने से, कर्मो को शीघ्र नशाता हैं।।७।।

तुम जपों निरंतर महामंत्र, अनुपम वैराग्य बढ़ाता हैं।
जपता भविजन जो श्रद्धा से, मन को बहु शान्त बनाता है।।८।।

सम्पूर्ण रोग को शीघ्र हरे, जो मंत्र भाव से ध्याता हैं।
हित 'भव्य' की शिक्षा ग्रहण करे, यह जामन मरण मिटाता हैं।।९।।